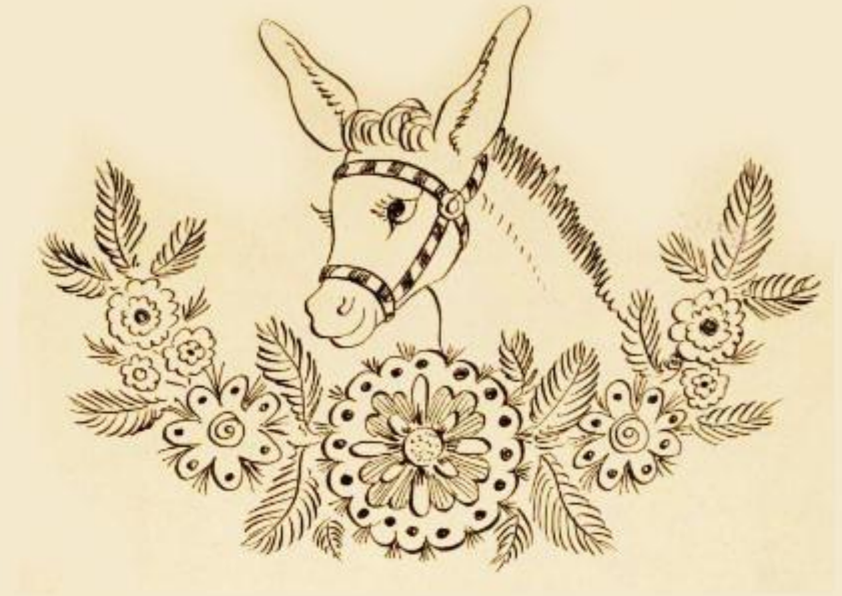
अड़ियल गधा





एक समय की बात है कि एक गधा एक गंदे से अस्तबल में अकेले रहता था. वह बहुत ही सीधा और अच्छा जानवर था. और वह इतना प्रसन्न रहता था कि सदा मुस्कराता रहता था. उसकी आँखें बहुत सुंदर थीं, उसके कान लंबे और नोकदार थे और उसकी फर्र रेशम की तरह मुलायम थी.

गधा एक अच्छे, गर्म देश में रहता था, जहाँ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे. उसका स्वामी एक धनी व्यापारी था जो पहाड़ी गाँव से घाटी में स्थित एक नगर में आता-जाता रहता था. इस नगर में सब व्यापारी अपना सामान बेचने के लिए एक-दूसरे से मिलते थे. इसलिए गधे को कई मील चलना और भारी बोझ उठाना पड़ता था. लेकिन बिना कोई शिकायत किये वह यह काम करता था, वह इतना भला गधा था!



उसका स्वामी बहुत मोटा और बहुत नाटा था. यद्यपि कि वह सदा रंग-बिरंगे, चटकीले कपड़े पहनता था, वह हमेशा चिड़चिड़ा दिखाई पड़ता था. इसलिए लोग उसे चिड़चिड़ा नाटा बुलाते थे.

चिड़चिड़े नाटे ने अपने गधे को रहने के लिए एक गंदा अस्तबल और ढेर सारी घास और पानी दे रखा था. लेकिन उसने उसे कोई नाम नहीं दिया था. न ही वह कभी उसकी प्रशंसा करता था



पहाड़ी गाँव की अपनी एक यात्रा के दौरान चिड़चिड़ा नाटा बहुत सारे सुंदर कालीन, उत्तम रेशम का एक बड़ा रोल, और मिट्टी के बने दो बड़े विशाल मर्तबान बेचना चाहता था. मर्तबानों को उसने गधे के दोनों ओर लटका दिया. कालीन लपेट कर उसने गधे की पीठ पर रख दिये. और गधे के सिर के ठीक पीछे रेशम के बड़े रोल को उसने बाँध दिया.



पहाड़ों के ऊपर-नीचे चलते हुए गधा गहरी साँस ले रहा था. उस पर लदा बोझ इतना भारी था कि हर पल उसके कदम छोटे होते जा रहे थे. लेकिन उसने कोई शिकायत न की.



जब आखिरकार चिड़चिड़े नाटे ने उससे कहा, "रुक जाओ, गधे, मैं थक गया हूँ. अगली पहाड़ी के ऊपर तुम्हें मुझे उठा कर ले जाना पड़ेगा," तो गधे ने सिर्फ एक आह भरी.

उसका स्वामी जब उस पर सवार हो गया तो गधा पहाड़ी रास्ते पर चलने लगा, हालांकि जितना धीरे वह अब तक चला था उससे भी धीरे वह चलने लगा. यह सोच कर कि अपने सारे सामान के ऊपर बैठा चिड़चिड़ा नाटा कितना हास्यजनक लग रहा होगा, गधा मन ही मन मुस्करा दिया.



पहाड़ी गाँव में खूब हलचल थी. कई व्यापारी रंग-बिरंगी तिपाइयों पर रखे अपने सामान का बाज़ार में प्रदर्शन कर रहे थे. एक सर्कस भी गाँव में आया हुआ था. गाँव की सीमा के निकट सर्कस के चमकीले तंबू लगे हुए थे. जब चिड़चिड़ा नाटा और उसका गधा पहुँचे तो गाँव के तंग रास्ते आदमियों, औरतों और बच्चों से भरे हुए थे.

भीड़भाड़ के कारण चिड़चिड़ा नाटा और गधा बाज़ार तक पहुँच ही न पाये. इसलिए चिड़चिड़े नाटे ने अपने कालीन, रेशम और मर्तबान सर्कस के पास ही सज़ा कर रख दिये.







सर्कस के जानवरों के प्रवेश-द्वार के पास उसने एक जंगले के साथ अपने गधे को बाँध दिया. चिड़चिड़े नाटे ने अपनी सारी वस्तुयें तुरंत ही बेच डालीं. फिर उसने अपने गधे को वहीं छोड़ दिया और पैसों से भरी थैली लेकर उन वस्तुओं की खोज में चल दिया जो वह बाज़ार में खरीदना चाहता था.

जाने से पहले उसने गधे से कहा, “यह रहा पानी और कुछ ओट्स, मैं सूर्यास्त के समय लौट आऊँगा.” उसने गधे को प्यार से थपकी देना भी ज़रुरी न समझा और वहाँ से चला गया.



लंबी यात्रा के बाद गधा इतना थक गया था कि सर्कस के जंगले पर अपना सिर रख कर सो गया. जिस समय गधा सो रहा था सर्कस के जानवर सुबह के प्रदर्शन के लिए तैयारी कर रहे थे. जब अपने नृत्य प्रदर्शन के लिए ज़ेब्रा गलियारे से चलता हुआ आया तो उसने गधे को देखा और बोला, “अरे, यह कैसा बदसूरत घोड़ा है!”



उसकी बात सुन कर गधे ने अपना सिर ऊपर उठाया और कहा, “मैं गधा हूँ, घोड़ा नहीं.”

ज़ेब्रा और निकट आया और उसे ऊपर-नीचे देख कर बोला, “और एक गधा क्या करता है?”

“मैं सामान उठा सकता हूँ, पहाड़ों के ऊपर और नीचे जा सकता हूँ.”

“सामान उठा सकते हो?” ज़ेब्रे ने आश्चर्य से कहा, “किसके लिए?”

“अपने स्वामी के लिए. चिड़चिड़ा नाटा मेरा स्वामी है,” गधे ने मुस्कराते हुए कहा.

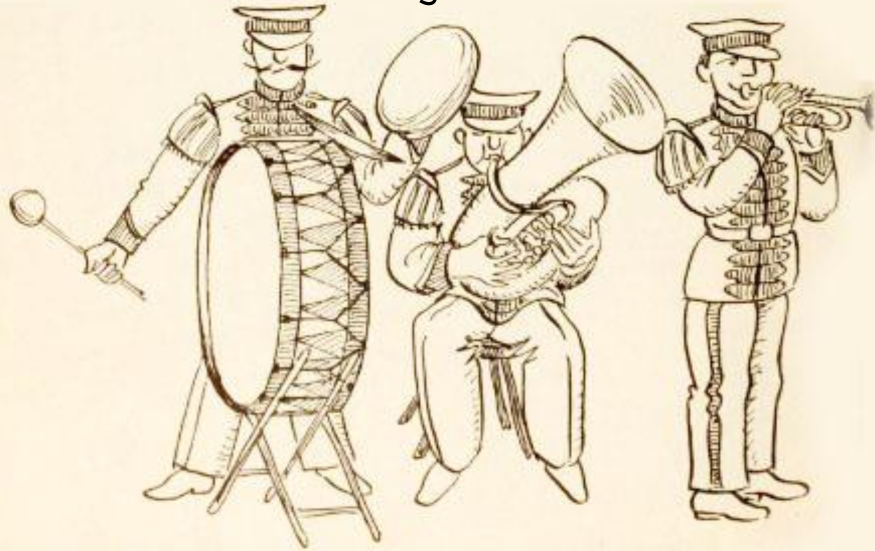


“अच्छा,” ज़ेब्रे ने कहा. “पर मुझे यह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं लगती, लेकिन निःसंदेह तुम्हारा स्वामी तुम्हारा खूब ध्यान रखता है.”

“तुम क्या कहना चाहते हो?” गधे ने पूछा.

“ओह, मैं कह रहा हूँ कि बढ़िया खाना, रात में ओढ़ने के लिए मुलायम कंबल. शायद पहनने के लिए एक रिबन; और निश्चय ही ढेर सारा प्यार अपने स्वामी से तुम्हें मिलता होगा.”

गधा आश्चर्यचकित हो गया क्योंकि इतनी अद्भुत चीज़ों के बारे में उसने कभी सुना भी न था.



“मुझे नहीं लगता है कि तुम इतने बुद्धिमान हो कि मेरी बात समझ सको. आखिर, तुम एक ज़ेब्रा नहीं हो,” ज़ेब्रे ने कहा. इतना कह कर वह गलियारे से चलता हुआ सर्कस रिंग में आ गया. और जब संगीत शुरु हुआ तो वह नाचने लगा,1-2-3-4 1-2-3-4.



अंत में ज़ेब्रा गोल-गोल घूमने लगा. और फिर वह अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा हो गया और गलियारे में वापस चलने लगा. उसके स्वामी ने एक सुंदर लाल कंबल उसकी पीठ पर डाल दिया.

उसके सिर को थपथपाते हुए उस आदमी ने कहा, “टोला पोला, तुम ने अद्भुत प्रदर्शन दिखाया.”

ज़ेब्रा के स्वामी को देख कर गधे की आँखें खुली की खुली रह गईं.



सर्कस रिंग से बाहर जाने से पहले ज़ेब्रे ने गधे को देखा और कहा, “प्लीज़, हमारे जंगले से अपना सिर ऊपर उठा लो. शायद एक गधा आरामदेह जीवन या प्यार करने वाला स्वामी पाने के लायक नहीं होता.”

“क्या?” गधे ने कहा, उसने कभी भी अपने जीवन या अपने स्वामी के बारे में शिकायत न की थी.

लेकिन घमंडी टोला पोला बस इतना ही बोला, “मेरे लिए तुम सदा एक बदसूरत घोड़े ही रहोगे. वैसे भी, मुझे जाना है क्योंकि अब एक सुनहरी थाली में मुझे खाना दिया जाता है.”



गधे ने उन ओट्स को देखा जो चिड़चिड़े नाटे ने उसके सामने ज़मीन पर डाल दिये थे. उसने कुछ नहीं खाया और उन बातों के विषय में सोचने लगा जो टोला पोला ने उससे कहीं थीं.

और जीवन में पहली बार उसकी मुस्कान गायब हो गई.



उसने सर्कस के दूसरी ओर सिर घूमा लिया और व्यस्त रास्ते को देखने लगा. रास्ते पर कई लोग आ-जा रहे थे, लेकिन किसी ने भी गधे की ओर न देखा.



रास्ते के दूसरी तरफ बच्चे एक सुंदर घोड़े के इर्द-गिर्द जमा थे. वह अकड़ कर खड़ा था और बच्चे उसे निहार रहे थे. उसकी लगाम बढ़िया चमड़े की थी और उस पर चाँदी के बटन लगे थे. उसकी काठी के नीचे मखमल की चद्दर थी. एक लड़का उसकी मालिश करने में व्यस्त था जिसके कारण वह और भी चमकीला लग रहा था. बच्चे उसे चीनी खिला रहे थे. घोड़े की जो आवभगत हो रही थी उसे देखकर नन्हा गधा उससे ईर्षा करने लगा. वह सोचने लगा कि शायद कोई आकर उसे भी चीनी खिलाये या कम से कम उसे देखे. इसलिए वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, "ई-आ, ई-आ," और फिर, "ई-आ, ई-आ."







उसकी आवाज़ सुन, घोड़े ने अपना सिर घुमाया और पूछा, “क्या तुम ने वह अजीब आवाज़ निकाली थी?”

और गधे ने उत्तर दिया, “मैं एक गधा हूँ.”

घोड़े ने अपना सिर हिलाया और कहा, “तुम कह रहे हो कि तुम बंदर हो? नहीं, यह सच नहीं है. बंदर उतने बड़े नहीं होते जितने बड़े तुम हो. तुम ऐसे ज़ेब्रा लगते हो जिसकी धारियाँ नहीं हैं.”

गधा यह सुन कर बड़ा आहत हुआ और ज़ोर से चिल्लाया, “नहीं, मैं एक ग-ग-गधा हूँ! मैं बिलकुल तुम्हारे जैसा दिखता हूँ.”



“मुझे हँसाओ मत,” घोड़े ने नाराज़ होकर कहा. “तुम एक बौने घोड़े हो, शायद. लेकिन एक बौने घोड़े के भी ऐसे अनोखे कान न होंगे. वैसे तुम्हारा नाम क्या है?”

गधे को स्वीकार करना पड़ा कि उसका कोई नाम नहीं था. तो घोड़े ने कहा, “इसी से तुम्हारी योग्यता पता लग जाती है. किसी ने तुम्हारा नाम रखना भी ज़रूरी न समझा. मेरा नाम रोबर्ट्स है. मैं एक प्रसिद्ध घोड़ा हूँ. अलविदा बंदर-गधे.”



अब गधा सच में बड़ा उदास हो गया. उसके लंबे, नुकीले कान लटक गए. सूर्यास्त तक वह वैसे ही खड़ा रहा, जब चिड़चिड़ा नाटा लौट आया. उसने इतना सामान खरीद लिया था कि दो लड़के उसका सामान उठाये उसके पीछे आ रहे थे.

स्वयं उसने दो रंग-बिरंगे सूट और कुछ विशाल जूते उठा रखे थे. दोनों में से एक लड़का सेबों से भरा बोरा खींच कर ला रहा था. दूसरे ने चित्रित प्लेट और कप और कपड़े और सुंदर दुशालों से भरा हुआ बोरा उठा रखा था.

चिड़चिड़े नाटे ने ध्यान ही न दिया कि गधे के कान लटके हुए थे. न ही उसने देखा कि गधे ने ओट्स और पानी को छूआ तक न था. उसने बस इतना कहा, “हम शीघ्र ही जा रहे हैं, गधे, क्योंकि मैं आधी रात से पहले घर पहुँचना चाहता हूँ.”

यह सोच कर कि उसका स्वामी उसकी अप्रसन्नता की ओर ध्यान देगा, गधे ने बड़े धीमे से कहा, “ई-आ.” लेकिन उसके स्वामी ने उसकी ओर न देखा. लड़कों ने बोरे उठा कर गधे के दोनों तरफ लटका दिये. चिड़चिड़े नाटे ने सूट और जूते उसकी पीठ पर लाद दिये. फिर चिड़चिड़ा नाटा और उसका दुःखी गधा वापस घर की ओर चल पड़े.



अपने स्वामी के बगल में गधा बहुत धीरे-धीरे चल रहा था क्योंकि वह गहरी सोच में था. उसने टोला पोला के बारे में सोचा और सोचा कि किस तरह टोला पोला का स्वामी उसके सिर को थपथपा रहा था. उसने सुनहरी थाली के बारे में सोचा जिस में ज़ेब्रा खाना खाता था. और उसने उस बात के विषय में सोचा जो ज़ेब्रे ने उस से कही थी-कि एक गधे से उसका कुछ लेना-देना नहीं था.



फिर नन्हे गधे ने उस घोड़े के विषय में सोचा जिस ने उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई थी और उसे गुस्सा आ गया.

वह इतना धीरे चल रहा था कि चिड़चिड़े नाटे ने एक-दो बार उसकी लगाम खींची. फिर गधे को रोबर्टस की बात याद आई, “किसी ने तुम्हारा नाम रखना भी ज़रूरी न समझा!”

वह आहत था, क्रोधित भी था, सिर्फ घोड़े पर ही नहीं, चिड़चिड़े नाटे पर भी. क्योंकि सत्य तो यही था कि जब चिड़चिड़े नाटे को उसकी ज़रुरत होती थी तभी वह उसकी ओर देखता था.

गुस्से में गधे ने अपने पाँव ज़मीन पर पटके. चिड़चिड़े नाटे ने उसकी तरफ देखा और अपनी भौहें ऊपर उठा लीं. लेकिन गधे ने स्वामी की ओर नहीं देखा. उसने सामने की ओर देखा और रुक गया.





वह पहाड़ पर बहुत ऊँचे आ चुके थे और अँधेरा होने ही वाला था.

“आगे बढ़ो!” चिड़चिड़े नाटे ने कठोरता से कहा.

लेकिन गधे ने अपने खुर मिट्टी में दबा दिये और एक इंच भी आगे न चला.

“आगे बढ़ो!” चिड़चिड़े नाटे ने लगाम को ज़ोर से खींचते हुए चिल्लाकर कहा. लेकिन गधा बिलकुल न हिला. तब चिड़चिड़े नाटे ने पेड़ से एक छोटी डाल तोड़ी और गधे की पीठ पर मारा.



इस व्यवहार से गधा और भी अड़ियल हो गया. वह पहाड़ी रास्ते के बीच में अपनी पिछली टाँगों पर बैठ गया. इस तरह बैठने के कारण सेबों से भरा बोरा पीछे की ओर लुढ़क गया और सारे सेब घूमते-घूमते पहाड़ से नीचे जाने लगे. उसके स्वामी ने सेबों को पकड़ने की कोशिश की लेकिन वह छोटा और मोटा और बहुत सुस्त था. इसलिए अधिकतर सेब लुढ़क कर नीचे चले गए.

अब उसे गधे पर बहुत गुस्सा आया.

"अरे, अड़ियल गधे!" वह चीखा. "नीच जानवर! बस घर पहुँचने की प्रतीक्षा करो!" लेकिन गधा तो एक कदम भी नहीं चला. ऐसा लग रहा था कि जैसे वह धरती के साथ जुड़ गया था.





कई घंटे बीत गए. आकाश में चाँद चमकने लगा था. लगभग आधी रात हो गई थी और चिड़चिड़ा नाटा गधे को डांट-डांट कर थक गया था. थक-हार कर वह एक पत्थर पर बैठ गया. गधा थोड़े से प्यार के लिए तरस रहा था.

उसने चिड़चिड़े नाटे की ओर देखा और मंद स्वर में बोला, “ई-आ, ई-आ!” वह इतने दुःखी स्वर में करुणा के लिए याचना कर रहा था कि चिड़चिड़े नाटे ने गधे से प्यार से बात करने का सोचा.



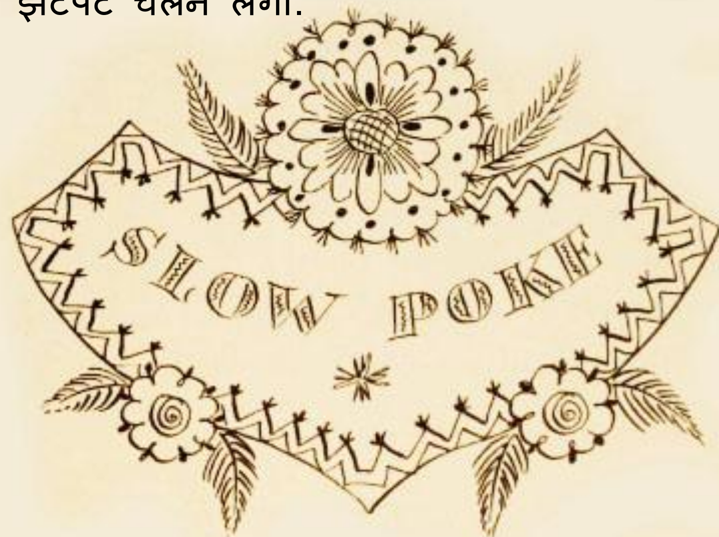
वह उठा और गधे के पास आया, उसकी पीठ को धीमे से थपथपाया और कहा, “अरे, नन्हे गधे, क्या बात है?”

गधे ने नीचे देखा और मुँह फुला लिया. चिड़चिड़े नाटे ने कान के पीछे उसे खुजलाया. गधा आँखें झपकने लगा. चिड़चिड़े नाटे ने उसकी नाक को खुजलाया. गधा सिर हिलाने लगा. फिर चिड़चिड़े नाटे को अपनी जेब में थोड़ी सी चीनी मिल गई जो उसने गधे को खाने के लिए दी.



“ई-आ, ई-आ!” गधे ने प्रसन्नता से कहा और उसके लटके हुए कान सीधे खड़े हो गए.

और जब आखिरकार चिड़चिड़े नाटे ने कहा, “अब उठो मेरे नन्हे सुस्त राम. चलो, घर चलते हैं,” गधा प्रसन्नता से झूम उठा. क्योंकि अब उसका एक नाम था-सुस्त राम! वह तुरंत उछल कर खड़ा हो गया, चिड़चिड़े नाटे की ओर देख कर मुस्कराया और झटपट चलने लगा.



अगली सुबह वह घर पहुँच गए. चिड़चिड़े नाटे ने अंततः एक शिक्षा प्राप्त कर ली थी. अगर उसे एक अड़ियल गधा नहीं चाहिए था तो उसे दयालु स्वामी बनना पड़ेगा. जब भी वह नन्हे सुस्त राम का ध्यान रखना भूल जाता तो गधा अड़ियल बन जाता, वैसा ही अड़ियल जैसा वह उस रात में था जब वह पहाड़ के ऊपर थे.



यह एक अड़ियल गधे की कहानी है. अब अगर तुम किसी को यह कहता सुनो कि ‘वह एक गधे समान अड़ियल है’ तो समझ लेना कि उसके अड़ियलपन को ठीक करने के लिए उसके साथ प्यार से व्यवहार करना होगा.





समाप्त